

मेरे नाना-नानी - युद्ध, अंतरात्मा और विरासत की एक पारिवारिक स्मृति

मैं अपनी फैमिली का आखिरी व्यक्ति हूँ।

अब कोई नहीं बचा जो मेरे नाना-नानी को फोटो या रजिस्टर में नाम की तरह नहीं, बल्कि जीते-जागते इंसान के रूप में याद रखता हो। जब मैं मर्स्सना, उनके होने का स्मृति, उनकी शांत बहादुरी और वह दर्द जो उन्होंने ढोया - सब कुछ गायब हो जाएगा, जब तक कि मैं इसे लिख न लिख दूँ। यह एक निजी कहानी है, लेकिन केवल निजी नहीं। यह बीसवीं सदी की हिंसा को छूती है, यह बताती है कि एक तानाशाही व्यवस्था के नीचे जीवित रहना और अपनी अंतरात्मा न खोना क्या था, और उस पतली लकीर को छूती है जिस पर लाखों साधारण लोगों को चलना पड़ा - एक तरफ सहभागिता, दूसरी तरफ प्रतिरोध।

यह मेरे नाना-नानी की कहानी है: मेरी नानी, जिन्होंने वियना पर बमबारी झेली और अपने बच्चों का अकल्पनीय नुकसान देखा; मेरे नाना, कुशल धातु-कारीगर, जिन्होंने एक युद्ध कारखाने के भीतर से ही नाज़ी शासन को छोटे-छोटे खतरनाक तरीकों से चुनौती दी। मैं यह इसलिए लिख रहा हूँ क्योंकि उनकी कहानी जीने की हकदार है। और इसलिए लिख रहा हूँ क्योंकि उनकी ज़िंदगी आज भी यह तय करती है कि मैं न्याय, स्मृति और नैतिक स्पष्टता को कैसे समझता हूँ।

मेरी नानी: बमों के नीचे जीवित रहना

मेरी नानी का जन्म 1921 में हुआ था। उन्होंने दूसरा विश्व युद्ध वियना के पूर्वी इलाकों में बिताया। ज्यादातर नागरिकों की तरह वे भी सरकारी निर्देशों का पालन करती थीं। जैसे ही हवाई हमले की सायरन बजती, वे अपने बच्चों को लेकर उस इमारत के तयशुदा बेसमेंट में भागतीं जो एयर-रेड शेल्टर था।

ये शेल्टर अक्सर बस पुराने तहखाने होते थे - नम, भीड़भाड़ वाले, हवा कम। इन्हें **Luftschutzkeller** («हवाई सुरक्षा तहखाना») कहते थे, मगर सुरक्षा नाममात्र की थी। हवा भारी और सड़ी हुई, बत्ती कभी-कभी जलती-कभी बुझती, और ब्लैकआउट नियमों की वजह से एक पतली-सी रोशनी भी शक पैदा कर सकती थी। हमलों के दौरान तहखाने लोगों से भरे होते, डर से भारी खामोशी होती और छत के टिके रहने या गिरने की चुप्पी भरी प्रतीक्षा होती।

एक रात छत नहीं टिकी।

जिस शेल्टर में नानी थीं, उसमें सीधा या लगभग सीधा बम गिरा। ऊपर की इमारत ढह गई। विस्फोट, मलबा और युद्ध की ताकत ने उनके आश्रय को तोड़ दिया। नानी को मलबे से जिंदा निकाला गया, लेकिन बुरी तरह घायल। उनकी खोपड़ी का एक हिस्सा चूर-चूर हो गया था और उसे निकालना पड़ा। सर्जनों ने गायब हड्डी की जगह धातु की प्लेट लगा दी। बाकी उम्र उस प्लेट का किनारा उनकी खोपड़ी की त्वचा के नीचे महसूस होता रहा। वे कभी-कभी कहती थीं कि ठंड में या तूफान से पहले दर्द बढ़ जाता है - एक मद्दम याद कि युद्ध ने उन्हें कभी पूरी तरह नहीं छोड़ा।

लेकिन सबसे बड़ा घाव शारीरिक नहीं था।

उसी रात उनके पहले दो बच्चे मर गए। दोनों एक पल में ईटों और आग के नीचे दब गए। उस पीढ़ी की ज्यादातर औरतों की तरह उन्हें भी जीना पड़ा - दफनाना पड़ा, रोना पड़ा, बिना टूटने की इजाजत के जीवित रहना पड़ा। उन्होंने वह दुख युद्धोत्तर वियना के भूख और अफरा-तफरी में ढोया।

फिर भी उन्होंने दोबारा शुरुआत की।

1950 में उन्होंने मेरी माँ को जन्म दिया - स्वस्थ, जिंदा, एक बच्ची जो उस शहर के खंडहरों में पैदा हुई जो धीरे-धीरे खुद को फिर से बना रहा था। उस कदम में जो हिम्मत चाहिए थी, उसकी कल्पना भी मुश्किल है। उनका शरीर टूटा हुआ था मगर चल

रहा था। उनका दिल अब भी उम्मीद कर सकता था।

फिर भी वे कभी पूरी तरह आज्ञाद नहीं हुईं। पूरी ज़िंदगी में एक बार भी मेट्रो में नहीं बैठीं। ज़मीन के नीचे, अपने नियंत्रण से बाहर बंद जगह में होने की सोच ही असहनीय थी। फिर भी वे अपने अपार्टमेंट भवन के बेसमेंट स्टोररूम का इस्तेमाल करती रहीं। छोटा-सा जिद्दी काम: उस जगह पर लौटना जो लगभग मार डाल चुकी थी – न चाहते हुए भी, सिर्फ इसलिए कि ज़िंदगी माँग रही थी।

वे दर्द, याद और खामोशी के साथ जीती रहीं। लेकिन जीती रहीं।

मेरे नाना: खराद, अंतरात्मा और पीतल

मेरे नाना का जन्म 1912 में हुआ। उन्होंने एक बिल्कुल अलग वियना में बड़ा होना देखा। युद्धों के बीच के वर्षों में सेमी-प्रोफेशनल फुटबॉल खेलते थे और धातु का काम करते थे। वे **ड्रेहर** बने – खराद पर सटीक धातु गढ़ने वाले कारीगर। एक कौशल जिसके बारे में उन्हें पता नहीं था कि वह उनकी जान बचाएगा।

1938 में जब ऑस्ट्रिया को नाज़ी जर्मनी में मिला लिया गया, तो आज्ञाकारिता ही जीवित रहने का पर्याय बन गई। नाज़ी पार्टी की सदस्यता पहले प्रोत्साहित की गई, फिर अपेक्षित, फिर अनिवार्य। मेरे नाना कभी नहीं बने। इसके लिए उन्होंने सीमित अवसर, बढ़ती निगरानी और गद्दारी का ठप्पा लगाने का खतरा चुकाया। फिर भी वे डटे रहे।

युद्ध आया तो भर्ती भी। उनकी उम्र के ज्यादातर मर्द फ्रंट पर भेज दिए गए। नाना वेहरमार्ख (जर्मन सेना) से इसलिए बच गए क्योंकि उनके हाथ थे। उनका कौशल युद्ध उद्योग को चाहिए था; उन्हें हथियार उत्पादन में लगा दिया गया। वे युद्ध मशीन का हिस्सा बने – सैनिक नहीं, धातु-कारीगर के रूप में।

वे **Saurer-Werke** में काम करते थे – वियना के पूर्वी इलाके सिमरिंग में बड़ा औद्योगिक कारखाना। युद्ध में यह कंपनी ट्रक इंजन, भारी वाहन और नाज़ी युद्ध मशीन के पुर्जे बनाती थी। साथ ही बड़े पैमाने पर **बलपूर्वक मज़दूरों** का इस्तेमाल करती थी – कब्ज़े वाले देशों के लोग, कैदी, क्रूर हालात में काम करने को मजबूर।

नाना ने अपने पास बचे थोड़े से स्पेस में प्रतिरोध किया।

कारखाने के कैंटीन से बचा हुआ खाना – जो कचरे में जाना था या आम कर्मचारियों को मिलता था – वे चुपके से जबरन मज़दूरों को दे देते थे। एक रोटी का टुकड़ा, कुछ आलू। बहुत कम लगता है। लेकिन था नहीं। जिस शासन में दया करना भी अपराध था और कोई भी सहकर्मी मुखबिर हो सकता था, वहाँ छोटा-सा नेकी का काम भी जानलेवा था। पकड़े जाते तो नौकरी जा सकती थी या उससे कहीं ज़्यादा।

फिर भी उन्होंने जोखिम उठाया।

और एक और बात हाल ही में साफ हुई है। नाना पीतल पर काम करते थे। मुझे पता है क्योंकि वे घर पर खुद बनाई फूलदान लाते थे। और क्योंकि नानी को शादी का तोहफा उन्होंने एक छोटी कला-कृति दी थी: **तीन ताड़ के पेड़ों वाली पीतल की नाव**, पतली चादर और तारों से बारीकी से गढ़ी हुई। जटिल, खूबसूरत, उसी धातु की बनी जिस पर वे कारखाने में काम करते थे।

यह एक कड़वी संभावना खोलता है।

नाज़ी शासन को मेडल, बैज और प्रतीकों का जुनून था। स्वस्तिक पिन, आयरन क्रॉस – लाखों-करोड़ों की तादाद में बनते थे ताकि आज्ञा का इनाम दिया जाए, हिंसा की महिमा हो और पदक्रम मज़बूत हो। उनमें से बहुत सारे पीतल या उस जैसे मिश्रधातु के होते थे। अगर नाना कारखाने के बारीक धातु-कार्य वाले हिस्से में थे – जो बहुत संभव है – तो शायद उन्होंने **खुद उन्हीं शासन-चिह्नों को बनाया हो**।

अगर ऐसा था तो क्रूर विडंबना है। एक ऐसा आदमी जो कभी पार्टी में नहीं गया, जो जबरन मज़दूरों को खाना देता रहा, जो राज्य की विचारधारा को ठुकराता रहा – शायद उसी कौशल से शासन के मेडल बनाता रहा। वही कौशल जिसने घर पर प्रेम

का तोहफा गढ़ा: नाव। ताड़ के पेड़। शांति।

अनुष्ठानों की तानाशाही में प्रतिरोध

घर में भी अनुरूप बनने का दबाव लगातार था।

जब नाना-नानी की शादी हुई, शासन ने उन्हें «उपहार» दिया: **मीन कैम्फ** की मुफ्त प्रति। उस ज़माने में यह आम चलन था। हर शादी और हर परिवार को हिटलर की विचारधारा से बाँधने का प्रतीक। नानी ने लाल पेंसिल ली और कवर पर **स्वस्तिक को काट दिया**। किताब फेंकी नहीं - रखी। सम्मान से नहीं, सबूत के तौर पर। जबरन थोपी गई चीज़ की निशानी के तौर पर।

उन्हें हिटलर के भाषण भी रेडियो पर सुनने पड़ते थे। नाज़ियों ने सस्ते रेडियो **बोल्क्सएम्फैंगर** («जनता का रिसीवर») लाखों में बनवाए ताकि हर घर में प्रचार पहुँचे। ब्लॉकवार्ट (इलाके के निगरानीकर्ता) चेक करते थे। रेडियो बंद हो, ब्लॉकआउट परदों से रोशनी झाँके - रिपोर्ट हो जाती थी।

नाना-नानी ने रास्ते निकाले।

ब्लॉकवार्ट को छोटी-छोटी सेवा देकर खरीदते, रेडियो खराब होने का बहाना बनाते, या कहते कि सिग्नल नहीं आ रहा। कभी चुपचाप बैठे रहते और घर पर न होने का नाटक करते। कभी जानबूझकर आवाज़ पूरी कर देते ताकि सारा भवन सुन ले - यह निष्ठा का नहीं, जीवित रहने का नाटक था।

उनका प्रतिरोध शांत था। रणनीतिक था। खुलकर विरोध आत्महत्या होती। फिर भी अपनी तरीके से उन्होंने इनकार किया।

मेरे लिए इसका मतलब

मेरी परवरिश अपराधबोध की विरासत में नहीं हुई। नाना-नानी एसएस में नहीं थे। वे विचारधारा के सिपाही नहीं थे। वे अपराधी नहीं थे। वे साधारण लोग थे असाधारण दबाव में, और उन्होंने शांत साहस से अपनी मानवता बचाए रखने की कोशिश की।

यह आज मेरे लिए इसलिए मायने रखता है क्योंकि मैं देख रहा हूँ कि अतीत को वर्तमान को आकार देने के लिए कैसे इस्तेमाल किया जा रहा है।

यूरोप के कुछ हिस्सों, खासकर जर्मनी और ऑस्ट्रिया में, इतिहास का बोझ कुछ नेताओं को **इजरायल राज्य का अंधा समर्थन** देने पर मजबूर करता है - तब भी जब वह फिलिस्तीनियों के खिलाफ गंभीर अत्याचार हो रहे हों। तर्क (जो शायद कभी ज़ोर से नहीं कहा जाता) साफ़ है: हम तब दोषी थे, इसलिए आज आलोचना नहीं कर सकते। यहूदियों पर हमने अत्याचार किए थे, इसलिए यहूदी राज्य का हर कदम समर्थन योग्य है।

लेकिन यह तर्क खोखला है। **दो गलत मिलकर सही नहीं हो जाते।**

यहूदियों का होलोकॉस्ट में हुआ दुख आज फिलिस्तीनियों का दुख को न्यायोचित नहीं ठहराता। यूरोपीय देशों का अपराधबोध किसी और बेघर किए गए लोगों से वसूला नहीं जाना चाहिए। अतीत के अपराधों का प्रायश्चित वर्तमान के अपराधों को न देखकर नहीं होता।

नाना-नानी ने वे अपराध नहीं किए। वे तानाशाही में जिए, लेकिन इंसान बने रहने की कोशिश की। नाना ने पीतल को करुणा के प्रतीक में बदला जबकि कारखाना उसे सत्ता के प्रतीक में बदल रहा था। नानी ने लाल पेंसिल से स्वस्तिक काट दिया। उनकी मिसाल मुझे साफ बोलने की ताकत देती है।

मुझे उन पापों का प्रायश्चित नहीं करना जिन्हें मेरी फैमिली ने नहीं किए। मुझे उन मूल्यों का सम्मान करना है जिनके साथ वे जिए: आज्ञाकारिता से पहले करुणा, विचारधारा से पहले शिष्टता, उस दौर में भी दूसरों की चिंता करने का साहस जब चिंता करना खतरनाक था।

स्मृति यानी इनकार

यह मेरा लेखा-जोखा है। मेरा अर्पण है। मेरा इनकार कि उनकी कहानी मिट जाए।

यह पीतल और बमों की कहानी है। ज़ोर से चलते रेडियो और चुपके बँटते खाने की कहानी है। एक खोपड़ी जो उम्र भर दर्द ढोती रही और एक पीतल की नाव जो स्मृति में तैरती है। उन लोगों की कहानी जो कभी नायक होने का दावा नहीं करते थे, मगर राक्षस बनने से इनकार कर गए।

मैं यह लिखता हूँ ताकि वे भुलाए न जाएँ। और लिखता हूँ ताकि खुद को और हर पाठक को याद दिलाऊँ कि न्याय सार्वभौमिक होना चाहिए। स्मृति ईमानदार होनी चाहिए। करुणा कभी शर्तों पर नहीं होनी चाहिए।

अंधेरे में भी एक छोटी-सी नेकी रोशनी बन सकती है। यही मेरे नाना-नानी ने मुझे सिखाया।

इसलिए मैं याद रखता हूँ।